

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत की ओलंपिक चुनौती: और
अधिक के लिए प्रयासरत

www.nextias.com

भारत की ओलंपिक चुनौती: और अधिक के लिए प्रयासरत

सन्दर्भ

- हाल ही में संपन्न पेरिस ओलंपिक में भारतीय दल ने छह पदकों के साथ वापसी की तथा 84 देशों में से 71वीं रैंकिंग प्राप्त हुई, जो निवेश और परिणामों के मध्य विसंगति को प्रकट करती है।

परिचय

- भारत ने पेरिस ओलंपिक में नीरज चोपड़ा (जिन्होंने रजत पदक जीता), मनु भाकर (शूटिंग में दो कांस्य पदक) और हॉकी टीम (एक कांस्य पदक) जैसे एथलीटों की उपलब्धियों का जश्न मनाया।
- हालांकि, निराशाएँ भी रहीं-विशेषकर बैडमिंटन में, जहाँ कोई पदक नहीं जीता गया और भारोत्तोलन में, जहाँ मीराभाई चानू चौथे स्थान पर रहकर पदक नहीं जीत पाई।
- इससे पहले, भारत ने टोक्यो 2020 में अपना अब तक का सबसे बड़ा दल (124 एथलीट) भेजा था, लेकिन नीरज चोपड़ा के ऐतिहासिक भाला फेंक स्वर्ण सहित केवल 7 पदक लेकर लौटा। फिर भी, भारत 47वें स्थान पर रहा।
- 2008 में अभिनव बिंद्रा का 10 मीटर राइफल शूटिंग गोल्ड एक बड़ी उपलब्धि थी-टीम खेलों के बीच चमकता हुआ एक व्यक्ति।
- हमारा स्वर्ण युग हॉकी में था, जहाँ हमने आठ स्वर्ण पदक जीते। लेकिन वह बहुत पहले की बात है-जैसे, स्वतंत्रता-पूर्व युग।
- उत्साहवर्धक संकेतों के बावजूद, 1900 में अपने पदार्पण के बाद से भारत के 41 ओलंपिक पदकों की कुल संख्या, आत्मनिरीक्षण और रणनीतिक योजना की आवश्यकता की स्पष्ट याद दिलाती है।

भारत को ओलंपिक में अधिक पदक प्राप्त करने में संघर्ष क्यों करना पड़ता है?

- **क्षमता बनाम प्रदर्शन:** भारत, जिसकी जनसंख्या 1.4 बिलियन है, सैद्धांतिक रूप से ओलंपिक में महाशक्ति बन सकता है। लेकिन अफसोस, क्षमता हमेशा पदक प्राप्त करने में परिवर्तित नहीं होती।
- **वित्त पोषण और प्रशिक्षण:** भारत के खेल मंत्रालय और भारतीय खेल प्राधिकरण ने एथलीट प्रशिक्षण के लिए 16 विषयों में ₹470 करोड़ का निवेश किया। इस वित्त पोषण के बावजूद, समग्र प्रदर्शन ने आत्मनिरीक्षण के लिए स्थान छोड़ दिया।
 - निवेश और परिणामों के मध्य विसंगति तब स्पष्ट होती है जब इसकी समग्र रैंकिंग 84 देशों में से 71वीं होती है। यह हमारी रणनीतियों की प्रभावशीलता पर प्रश्न उत्पन्न करता है।

- **जन भागीदारी:** जबकि भारत ने प्रगति की है, जन भागीदारी अभी भी एक चुनौती बनी हुई है। हमें व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अधिक सुलभ खेल सुविधाओं की आवश्यकता है।
- **खेल संस्कृति:** कम उम्र से ही खेल संस्कृति का विकास करना महत्वपूर्ण है। स्कूलों, कॉलेजों और स्थानीय समुदायों को शिक्षा के अतिरिक्त खेलों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहन देना चाहिए।
- **विविध खेल:** भारत के खेल पारिस्थितिकी तंत्र को विभिन्न प्रकार के खेलों को अपनाना चाहिए। जहाँ क्रिकेट का प्रभुत्व है, वहीं बैडमिंटन, कुश्ती, एथलेटिक्स और मुक्केबाजी जैसे खेलों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।
- **बुनियादी ढांचे का रखरखाव:** बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है, लेकिन वर्तमान सुविधाओं को बनाए रखना और उनका उन्नयन करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

बदलता परिदृश्य

- **भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI):** यह खेल के बुनियादी ढांचे को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभिन्न खेल सुविधाओं का प्रबंधन करता है, कोचिंग प्रदान करता है और देश भर में प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देता है। SAI द्वारा स्थापित क्षेत्रीय केंद्र और अकादमियाँ युवा एथलीटों को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

क्या आप जानते हैं?

- 'खेल' राज्य का विषय होने के कारण, पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहन देने और उनकी प्रतियोगिताओं के आयोजन सहित खेलों के विकास का उत्तरदायित्व मुख्य रूप से संबंधित राज्य/संघ शासित प्रदेश सरकारों की है।
- केंद्र सरकार केवल महत्वपूर्ण अंतरालों को समाप्त उनके प्रयासों को पूरक बनाती है।

भारतीय खेल प्राधिकरण(SAI)

- यह युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के तत्वावधान में एक स्वायत्त संगठन है, जो 8-25 वर्ष की आयु वर्ग के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान करने और उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए देश भर में विभिन्न खेल प्रोत्साहन योजनाएं चला रहा है।

- **खेलों में समावेशिता और विविधता:** भारत खेलों में समावेशिता और विविधता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। खेलो इंडिया गेम्स, खेलो इंडिया यूथ गेम्स, खेलो इंडिया विंटर गेम्स और आगामी खेलो इंडिया पैरा गेम्स जैसी पहल विभिन्न विषयों में प्रतिभाओं को प्रोत्साहन दे रही हैं।
- **खेलो इंडिया योजना:** 2018 में शुरू की गई, इसका उद्देश्य बुनियादी स्तर पर एक मजबूत खेल पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। यह विभिन्न खेलों में प्रतिभाओं की पहचान करने

और उन्हें विकसित करने, प्रशिक्षण और विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इस योजना के माध्यम से, युवा एथलीटों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच मिलता है।

- पेरिस में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले 117 एथलीटों में से 28 खेलो इंडिया एथलीट थे।
- **खेल अवसंरचना:** भारत में अब लगभग 100 खेल सुविधाएं हैं जो अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करती हैं। इनमें स्टेडियम, खेल परिसर, कॉलेज और विश्वविद्यालय के मैदान, सामुदायिक केंद्र और निजी सुविधाएं सम्मिलित हैं।
 - राष्ट्रीय निवेश पाइपलाइन (NIP) और राष्ट्रीय मुद्राकरण पाइपलाइन (NMP) खेल अवसंरचना को अधिक बेहतर बनाने के लिए दो प्रमुख पहल हैं:
 - **NIP:** स्टेडियमों और खेल परिसरों के लिए 90 से अधिक NIP परियोजनाएं क्रियान्वित हैं, जिनमें कुल निवेश 1.49 बिलियन डॉलर है। परियोजना कार्यान्वयन में 21% हिस्सेदारी के साथ निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी को प्रोत्साहित किया जाता है।
 - **NMP:** दो राष्ट्रीय स्टेडियम और दो SAI क्षेत्रीय केंद्रों को मुद्राकरण के लिए चिह्नित किया गया है। मुद्राकरण के तरीके में निजी रियायतकर्ताओं के साथ संचालन, प्रबंधन और विकास समझौते (OMDA) सम्मिलित हैं।
- **निजी खिलाड़ियों की भागीदारी:** खेल नौकरशाही, जो कभी कम वित्तपोषित और भ्रष्टाचार से दागदार थी, अब कुछ ध्यान आकर्षित कर रही है। निजी उद्यम आगे आ रहे हैं और उच्च स्तर के एथलीटों को प्रशिक्षित कर रहे हैं।

लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना(TOPS)

- TOPS कार्यक्रम को 2014 में एक स्पष्ट मिशन के साथ लॉन्च किया गया था: ओलंपिक के लिए संभावित पदक विजेताओं की पहचान करना, उन्हें तैयार करना और भारत की पदक संभावनाओं को बढ़ाना। इसमें शामिल हैं:
- **उत्कृष्ट एथलीट पहचान:** TOPS का मुख्य उद्देश्य उन उत्कृष्ट एथलीटों की पहचान करना है, जिनमें ओलंपिक पोडियम पर खड़े होने की क्षमता है। इन एथलीटों का सावधानीपूर्वक चयन करने के लिए एक समिति - TOPS उत्कृष्ट एथलीट पहचान समिति - का गठन किया गया था। इसका ध्यान उन खेलों पर है जिन्हें 'उच्च प्राथमिकता' माना जाता है, जिसमें तीरंदाजी, बैडमिंटन, मुक्केबाजी, हॉकी, शूटिंग और कुश्ती सम्मिलित हैं।
- **वित्तीय सहायता:** एक बार पहचान हो जाने के बाद, इन एथलीटों को लक्षित सहायता मिलती है। इस योजना का उद्देश्य उनकी तैयारियों को बढ़ावा देना है, यह सुनिश्चित करना है कि उनके पास कठोर प्रशिक्षण और प्रतियोगिता के लिए आवश्यक संसाधन हों

निष्कर्ष और आगे की राह: खेलों में भारत की वैश्विक स्थिति में सुधार

- बुनियादी स्तर पर फिटनेस को बढ़ावा देना; स्कूलों को एकीकृत करना; अधिक खेलों का प्रसारण करना; कॉर्पोरेट प्रायोजन, निवेश और परोपकार; खेल बुनियादी ढांचे को उन्नत करना महत्वपूर्ण है।
- नीति आयोग ने स्कूली पाठ्यक्रम में खेलों को शामिल करने, विश्व स्तरीय कोचों को शामिल करने और सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से बुनियादी ढांचे में सुधार करने का सुझाव दिया है।
- रणनीतिक योजना, बेहतर बुनियादी ढांचा और वैज्ञानिक प्रशिक्षण पद्धतियाँ आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त, उच्चतम स्तर पर प्रतिस्पर्धा के मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को संबोधित करना महत्वपूर्ण है।
 - अंततः, यह सिर्फ शारीरिक क्षमता की बात नहीं है; यह मानसिक लचीलेपन की भी बात है।
- भारत ने 2036 ग्रीष्मकालीन ओलंपिक की मेज़बानी के बारे में अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है, साथ ही 2029 युवा ओलंपिक की मेज़बानी करने की इच्छा भी व्यक्त की है।
- इसमें विभिन्न बड़ी चुनौतियाँ हैं। बुनियादी ढाँचा, रसद और एथलीटों और दर्शकों के लिए एक सहज अनुभव सुनिश्चित करना - इन सभी कारकों के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता है। लेकिन जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री ने सही कहा है, भारत इस प्रतिष्ठित आयोजन के लिए अपने प्रयासों में "कोई कमी नहीं छोड़ेगा"।
 - इसके बाद भारत ओलंपिक खेलों की मेज़बानी करने वाला चौथा एशियाई देश बन जाएगा।
- भारत की ओलंपिक चुनौती बहुआयामी है। यह सिर्फ पदकों से कहीं अधिक है; यह खेल की संस्कृति को बढ़ावा देने, हमारे एथलीटों का समर्थन करने और उत्कृष्टता के लक्ष्य के बारे में है।

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. भारत ओलंपिक खेलों में अपने ऐतिहासिक खराब प्रदर्शन में कैसे सुधार ला सकता है और वैश्विक मंच पर निरंतर सफलता कैसे प्राप्त कर सकता है?

Source: BL

